

storyweaver Community

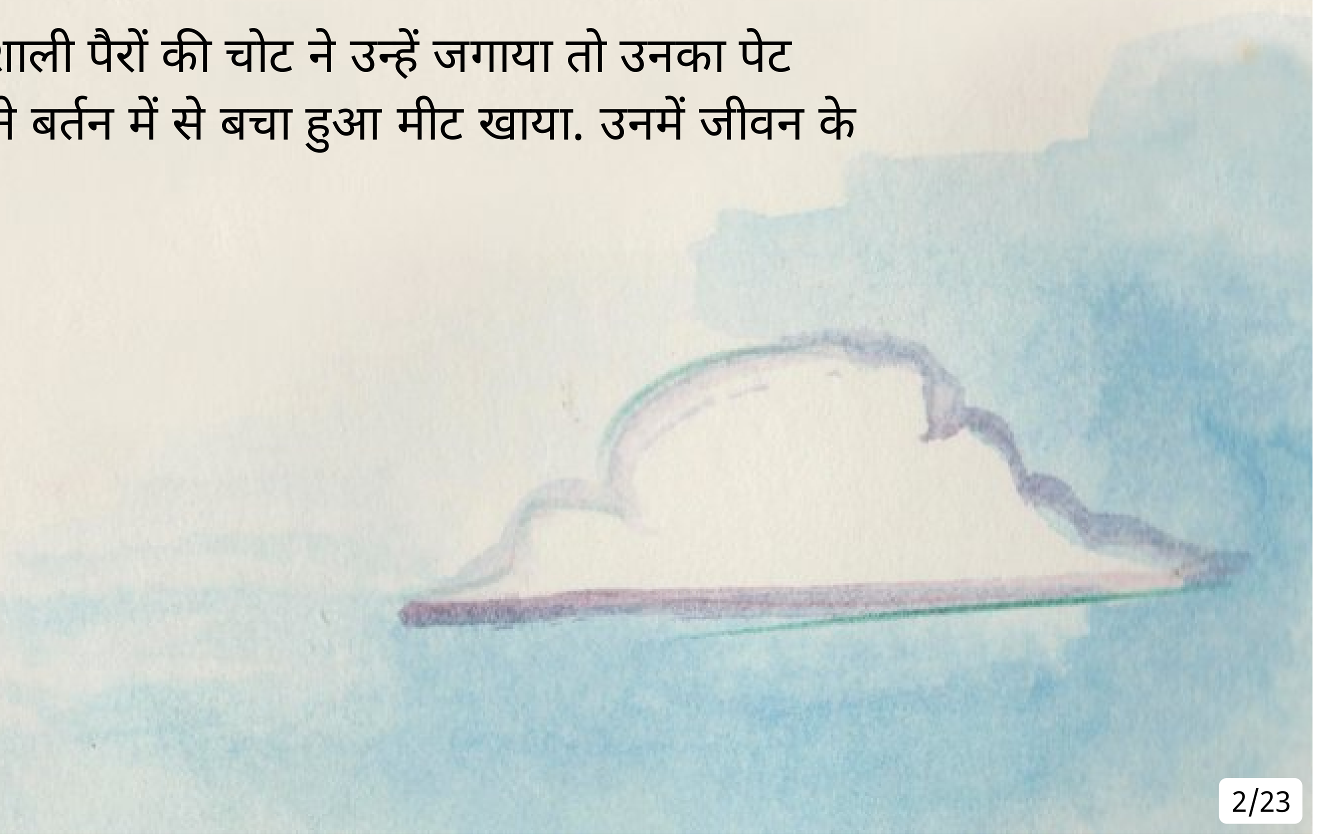
पठन स्तर ४

हम, एक-साथ मज़बूत होंगे - अल्बर्टिना सिसुलू की कहानी

Author: Liesl Jobson
Illustrator: Alice Toich
Translator: Arvind Gupta

कठोर सर्दी के कारण बहुत से लोग बीमार थे. मा-मोनिकाज़ी के गाल जल रहे थे. उनके शरीर से पसीना टपक रहा था. वो चेहरे को ठंडा करने के लिए अपने उस पर बर्फीले घास रखना चाहती थीं. कंबल के नीचे उनके पेट में बच्चा था जिसके लिए वो गीत गा रही थीं : "मजबूत बनो, छोटे बच्चे. सर्दी जाने वाली है. थोड़े बहादुर बनो छोटे बच्चे. हम, एक-साथ मज़बूत होंगे! "

जब रात में बच्चे के शक्तिशाली पैरों की चोट ने उन्हें जगाया तो उनका पेट गड़गड़ाने लगा. फिर उन्होंने बर्तन में से बचा हुआ मीट खाया. उनमें जीवन के लिए बड़ी भूख थी.





एक रात चांद काफी बड़ा, मोटा और हमेशा से कहीं ज़्यादा गुलाबी था. उनकी सांस फूलने लगी. बच्चा तैयार था. जन्म वाले कमरे में मौसियों ने उनकी पीठ को रगड़ा और पानी गर्म किया. जब मोनिकाज़ी ने अपनी सुंदर बेटी को अपने हाथों में उठाया, तो वो तुरंत समझ गईं कि वह विशेष लड़की थी - एक लड़ाकू बच्ची.

कितना बड़ा आशीर्वाद है! उसका नाम नोनीसेकेले होगा. उसे सभी का आशीर्वाद मिलेगा.

नोनीसेकेले सुंदर और मजबूत थी और उसकी आँखें दो काले बटनों की तरह चमकती थीं. वो अपने बड़े भाई मकेंगी से बहुत प्यार करती थी. भाई उसे खूब हंसाता था जिससे पूरे घर में हँसी फैलती थी. दांत निकलने से पहले ही उसे मांस खाना पसंद था. उसकी प्रिय चाची हमेशा अपनी प्लेट में निटिकी के लिए अलग से थोड़ा मीट रखती थीं. मा-मोनिकाज़ी अपने बगीचे में परिवार को खिलाने के लिए पालक और स्क्वाश उगाती थीं. मकेंगी, बगीचे में चुगने वाली मुर्गियों को भगाता था. निटिकी अपने भाई के पीछे-पीछे दौड़ती थी. उससे उसके पैर खूब मज़बूत हो गए थे.

मा-मोनिकाज़ी का एक और छोटा बेटा था - वेलापी, और उससे छोटा था कुडले. अंत में एक और बेटी, नोमयालेको. छोटी निटिकी बच्ची की लंगोटियां धोती थी और उन्हें तह करती थी. वो घर में झाड़ू लगाती थी और चूल्हे में आग जलाती थी. जब छोटा भाई रोता, तो वो उसे उठाती थी, और फिर उसे गुदगुदाकर हंसाती थी.

उसने ही उन्हें गाना सिखाया: "मजबूत बनो, छोटे बच्चे. सर्दी जा चुकी है. बहादुर बनो छोटे बच्चे. हम, एक-साथ मज़बूत होंगे! "



किंग्कीवे, उनके दादाजी घोड़े पालते थे. उनकी पसंदीदा थी एक चमकदार काली घोड़ी - शिशि. जब निटिकी कुछ बड़ी हुई, तब दादाजी उसे अपने सामने काठी पर बैठाने लगे. उनकी मजबूत बाहें बच्ची को संभाले रखती थीं. वो बच्ची की उंगलियों में घोड़े की लगाम थमा देते थे.

उन्होंने बच्ची को शिशि से कोमलता से बात करना सिखाया, कठोर बालों वाले ब्रश से उसे संवारना सिखाया. जब वो उसकी चमकीली त्वचा को सहलाती तब निटिकी फुसफुसाते हुए कहती, "तुम सबसे सुंदर प्राणी हो. मुझे अपनी पीठ पर सवारी करने देने के लिए तुम्हारा धन्यवाद."

उसके पिता, बोनिलिज़वे, क्रिसमस पर ही खदान से घर वापिस आते थे. निटिकी खुद को खींचकर शिशि की चौड़ी पीठ पर बैठ जाती थी. वह बस स्टॉप पर पिताजी से मिलने जाती थी. निटिकी सीधी, तनकर बैठती थी. उसके घुटने सही टिके होते थे. वो अपनी कोमल उंगलियों से लगाम संभालती थी.

बोनीलिज़वे को अपनी बेटी पर बेहद गर्व था. निटिकी के कारण पिताजी के चेहरे पर बड़ी मुस्कान थी.



अपने छठे जन्मदिन पर वो स्कूल गई. "तुम्हें एक अंग्रेजी नाम चुनना होगा," उसकी ईसाई टीचर ने कहा. लेकिन निटिकी को अपना पुराना नाम ही पसंद था. "मुझे नए नाम की क्या ज़रुरत है?" उसने पूछा. टीचर ने एक दुष्ट नज़र से उसे देखा और फिर जोर-जोर से नाम पढ़े: "अदाह, एग्नेस, अल्बर्टिना, अन्ना." उनका क्या मतलब था? निटिकी को एक लम्बा नाम सबसे पसंद आया अल-बेर-टी-ना! उस नाम में लय थी. अल-बेर-टी- ना! उस नाम में एक उछाल था. अल्बर्टिना एक ऐसा नाम था जिसके साथ कोई खिलवाड़ नहीं कर सकता था.

जब उसकी चचेरी बहन ने पास के शहर की एक सुंदर लड़की से शादी की, तो अल्बर्टिना को उमखापी - सम्मानीय मेड के रूप में चुना गया! शादी से पहले सप्ताह में उसने पारंपरिक छोटी स्कर्ट इसीहखा की सिलाई की और उसने चमकीले मोतियों की आमातीकिटी बनाई. फिर माँ ने उसे सफ़ेद झंडा दिया और कहा, "आज तुम्हें एक बड़ा बड़ा काम करना है, मेरा आशीर्वाद!"

सड़क पर मोड़ में अल्बर्टिना ने झंडा लहराया, फिर शीशि को पीछे किया, फिर सभी लोग मीलों तक उसके पीछे-पीछे समारोह तक चले. अगर वो गलती करती है तो लोग कुछ गपशप में लग जाते, लेकिन मेहमान सड़क पर चुपचाप खड़े रहे. उन्होंने गीत गाए. उन्होंने घोड़े और लड़की के ऊपर फूल फेंके.


Adah
Agnes
Albertina
Anna



उसकी माँ अक्सर बीमार रहती थी और घर आने के बाद अल्बर्टिना उनकी देखभाल करती थी.
प्राथमिक स्कूल के अपने अंतिम वर्ष में, अल्बर्टिना स्कूल में सबसे बड़ी उम्र की लड़की थी. उसे हेडगर्ल चुना गया और उसने बड़े गौरव के साथ उस बिल्ले को पहना.
उसकी सबसे अच्छी दोस्त, बेट्टी ने उसे एक प्रतियोगिता के बारे में बताया, "मेरी चतुर मित्र, तुम उसमें ज़रूर भाग लेना."
"उसमें पुरस्कार क्या है?" अल्बर्टिना ने पूछा. उसकी उत्सुकता कुछ बढ़ी.
"हाई स्कूल के लिए एक स्कालरशिप!" बेट्टी ने कहा. "तुम अर्ज़ी ज़रूर भरना. तुम्हें ज़रूर सफलता मिलेगी."

अल्बर्टिना ने मोमबत्ती के बुझने तक पढ़ाई की. उसने गणित के सवाल हल किए, वर्तनी का अभ्यास किया. उसने पेंसिल की नोक बनाई और जूते अच्छी तरह से पॉलिश किए. अगली सुबह वो शिशि के बाड़े में गई. घोड़ा हिनहिनाया और उसने ज़मीन पर पैर पटके.

परीक्षा शुरू हुई. अल्बर्टिना की उंगलियां कांपने लगीं. प्रश्न मुश्किल थे. उसका मुंह सूख गया. उसका हाथ उसकी पेंसिल पर सो गया लेकिन उसने लिखना जारी रखा. "तुमने अच्छा किया, अल्बर्टिना!" अंत में टीचर ने कहा. फिर एक ऊंचा अफसर वहां पहुंचा और टॉप के दो छात्रों को मंच पर बुलाया. "अल्बर्टिना ने बहुत अच्छा किया था, उसे सौ-प्रतिशत अंक मिले हैं," उसने कहा," लेकिन उसकी उम्र बहुत ज़्यादा हैं. इसलिए दूसरे छात्र को स्कालरशिप मिलेगा... ”

अल्बर्टिना ने रोने की कोशिश नहीं की. "यह अनुचित है," बेट्टी चिल्लाई और वो गुस्से में ऊपर-नीचे कूदी. "यह तो नियम में नहीं लिखा था!" अब अल्बर्टिना हाई स्कूल कैसे जाएगी? वो अपने पैर घिसटते हुए घर पहुंची.

उसके टीचर ने अनुचित निर्णय के बारे में अखबार में लिखा. कैथोलिक मिशन स्टेशन के पादरी जो ने नाश्ते के समय वो कहानी पढ़ी. उन्होंने उबले हुए अंडे को ज़ोर से मारकर तोड़ा. उन्होंने मेज़ पर बैठे फादर बर्नार्ड को वो खबर पढ़वाई. उन्हें भी बात एकदम गलत लगी.


Applee
!!
20/20

जल्द ही अल्बर्टिना को एक स्कालरशिप मिल गया. मतेटीले के पास मारियाज़ेल, उनके गांव सोलोब से बहुत दूर था, लेकिन उस खबर से पूरा गांव बेहद उत्साहित हुआ. उनके गांव की कोई लड़की पहली बार हाई स्कूल में पढ़ने जाएगी. वो अपने गांव का नाम रौशन करेगी. गांव वालों ने एक बड़ी पार्टी आयोजित की. महिलाओं ने ज्वार की शराब बनाई और भट्टी में आग जलाई. उन्होंने मुर्गियां काटीं और उनका गोश्त पकाया. अल्बर्टिना बस हंसती रही. मुस्कुराने से अंत में उसका मुहं दुखने लगा.

उसने अपना भूरे रंग का सूटकेस पैक किया और जूते फिर से पॉलिश किए. मतियाल के लिए बस में रवाना होने से पहले उसने शिशि से अलविदा कहा. अल्बर्टिना ने उसके शरीर को ब्रश किया. फिर उसने घोड़े के कान में अपने सभी प्रश्न और परेशानियां बताईं : अगर मैं खो गई तो क्या होगा? क्या मैं नए दोस्त बना पाऊंगी? क्या मैं घर से इतनी दूरी पर भी होशियार रहूंगी? शिशि हिनहिनाई और उसने अपने पैर पटके.


LE LE LE LE LE LE

सूरज निकलने से पहले ही स्कूल का दिन शुरू हो जाता था. लड़कियां ठंडे पानी में जल्दी से नहाती थीं और प्रार्थना से पहले अपनी डॉरमिटरी साफ़ करती थीं. दूधिया का दलिया कभी भी पर्याप्त मात्रा में नहीं मिलता था; और शोरबा भी उतना स्वादिष्ट नहीं था जैसा घर पर आंटी बनाती थीं. लेकिन अल्बर्टिना ने कड़ी मेहनत से पढ़ाई की. वो दोपहर की धूप में नेटबॉल खेलती थी.

अपने स्कूल की छुट्टियों में अल्बर्टिना ने मिशन स्टेशन में काम किया. उसने वॉशबोर्ड पर रगड़कर कपड़े साफ़ किए. उसने तांबे के टब में चादरें उबालीं, फिर उन्हें निचोड़ा. उसने स्कूल के बगीचे में निंदाई, गुड़ाई की लेकिन उसे अपने परिवार की बहुत याद आई. अब उसके भाइयों-बहनों को कौन मजेदार कहानियाँ सुनाएगा? उनकी रोती आँखों को कौन पोंछेगा? उन्हें हँसाने के लिए कौन गुदगुदी करेगा?

अल्बर्टिना को सिखाने वाली ननों से बहुत प्यार हो गया. क्या वह एक नन बन सकती थी? "लेकिन नन कुछ भी कमाई नहीं करती हैं," फादर बर्नार्ड ने कहा. "अच्छा होगा अगर तुम एक नर्स बनो? फिर तुम्हें पढ़ाई के दौरान भी पैसे मिलेंगे."



अल्बर्टीना ने जोहान्सबर्ग के लिए एक ट्रेन ली. उसने एक स्मार्ट सफेद वर्दी, नए नीले जूते और एक चमकदार फाउंटेन पेन खरीदा. अस्पताल में पूरे दिन बीमार लोगों का तांता लगा रहता था. उसने बड़े प्रेम से अपनी उंगलियों से उनके घाव साफ किए. उसने बूढ़े लोगों के साथ नम्र व्यवहार किया. जब छोटे बच्चे रोते थे, तो वह गाती थी: “मजबूत बनो, छोटे बच्चों. सर्दी जल्द ख़त्म हो जाएगी. थोड़ा बहादुर बनो. हम, एक-साथ मजबूत होंगे!"

कई दिन अल्बर्टिना ने पूरी रात भर काम किया. उसने खिड़की से बाहर देखा और अपने परिवार के बारे में सोचा. क्या बच्चों को भूख लगी होगी? क्या वे स्कूल जाते होंगे? शिशि पर कौन सवारी करता होगा? उसे हरे रंग के पालक की भी याद आई. उसे मिट्टी की महक याद आई. यहाँ कोई सब्जी का कोई बगीचा नहीं था. घोडा रखने के लिए भी कोई जगह नहीं थी.

अल्बर्टिना कभी पार्टियों में नहीं जाती थी. उसने एक-एक पैसा बचाया. छुट्टी वाले दिन उसने टेनिस खेलना सीखा. वो ज़ोर से गेंद को नेट के पार फेंकती थी. हमेशा, वो घर कुछ ज़्यादा पैसे भेजने की कोशिश करती थी.



वाल्टर सिसुलू एक बहादुर और चतुर आदमी था जिसने दक्षिण-अफ्रीका के लिए स्वतंत्रता का एक सपना देखा था. उसका बढ़िया मुस्कान ने अल्बर्टिना का दिल जीत लिया. वे शहर की सड़कों पर एक साथ चले. उसने अपना नाज़ुक हाथ वाल्टर सिसुलू के कंधे पर रखा. वाल्टर चाहते थे कि अल्बर्टिना उनके बच्चों की मां बने.

शादी वाले दिन बंटू मेन्स सोशल सेंटर को चमकीले रिबनों से सजाया गया. अल्बर्टीना की लंबी आस्तीन वाली पोशाक में लम्बा फीता था. उस विशेष अवसर पर कई दोस्तों ने उन्हें आशीर्वाद दिया. अल्बर्टीना ने अपने बगीचे में फूलों के पौधे लगाए. एक वर्ष के भीतर, मैक्स का जन्म हुआ. अब अल्बर्टिना माँ बन गई थी. एक दिन लोग उसे राष्ट्र की माँ बुलाएंगे. मैक्स की माँ जैसी ही काले बटन वली आँखें थीं और पिता जैसी गोल ठुड्डी थी. वह उनके भविष्य की आशा था.

अल्बर्टिना एक नए दक्षिण-अफ्रीका के लिए लड़ना चाहती थी, जिससे मैक्स एक मुक्त राष्ट्र में जी सके. जब मैक्स रोता, तो वो गीत गाती : “मजबूत बनो, छोटे बच्चे. सर्दी जल्द ख़त्म हो जाएगी. थोड़ा बहादुर बनो. हम, एक-साथ मजबूत होंगे!"





पुलिस ने एक रात को उनका दरवाज़ा खटखटाया. अल्बर्टिना ने उन लोगों को डाँटा जिन्होंने उनके घर की तलाशी ली. "तुम लोग कितने असभ्य हो!" उसने कहा, "जो मेरे घर को गन्दा कर रहे हो."

सुबह को अल्बर्टिना के प्रिय फूल उनके जूतों तले दब गए थे. उसने एक्सोलोब में अपने सब्ज़ी के बगीचे से मुर्गियों को भगाया था. अब उसने दुबारा अपने बगीचे को लगाया. उसे पता था कि पौधों में दुबारा फूल खिलेंगे.

वह अपने पति का समर्थन करेगी. पति के पास कई गुप्त कागज़ थे और वो पुलिस से छिपता रहता था.



उसने महिलाओं के साथ मिलकर प्रिटोरिआ में एक मोर्चे का आयोजन किया. महिलाओं ने "पास" ले जाने से इनकार कर दिया. उन्होंने गीत गया, "अगर तुम किसी महिला को मरोगे; तो तुम एक चट्टान पर हमला करोगे! ”

वाल्टर की गिरफ्तारी के बाद अल्बर्टिना ने कई साल बड़ी कठिनाई में बिताए. वाल्टर को रोबेन द्वीप जेल में 26 साल की सजा हुई. अल्बर्टिना भी कई बार जेल गई. अक्सर उसे डर लगता था. अक्सर वो अकेला महसूस करती थी.

लेकिन अंधेरी रातों में भी, अपने जेल की खिड़की से भी वो चाँद का एक टुकड़ा देख सकती थी. उसने वही गीत गाया जो मा-मोनिकाज़ी ने उसके जन्म से पहले गाया था: "मजबूत बनो, छोटे बच्चे. सर्दी जाने वाली है. थोड़े बहादुर बनो छोटे बच्चे. हम, एक-साथ मज़बूत होंगे! "



Story Attribution:

This story: हम, एक-साथ मज़बूत होंगे - अल्बर्टिना सिसुलू की कहानी is translated by Arvind Gupta . The © for this translation lies with Arvind Gupta, 2020. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Based on Original story: 'Together We're Strong: The Story of Albertina Sisulu', by Liesl Jobson . © Book Dash , 2014. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license.

Images Attributions:

Cover page: Girl in her village, by Alice Toich © Book Dash, 2014. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 2: Cloud, by Alice Toich © Book Dash, 2014. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 3: Lady holding a child, by Alice Toich © Book Dash, 2014. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 5: Child eating, by Alice Toich © Book Dash, 2014. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 7: Girl and a horse, by Alice Toich © Book Dash, 2014. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 9: Girls sitting, by Alice Toich © Book Dash, 2014. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 10: Two girls studying together, by Alice Toich © Book Dash, 2014. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 12: Boy with a full score on his test, by Alice Toich © Book Dash, 2014. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 14: People dancing around a bonfire, by Alice Toich © Book Dash, 2014. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 16: Girl waiting for a school bus, by Alice Toich © Book Dash, 2014. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license.

Images Attributions:

Page 18: Nurse checking a patient, by Alice Toich © Book Dash, 2014. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 20: Wedding party, by Alice Toich © Book Dash, 2014. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 21: Gardener, by Alice Toich © Book Dash, 2014. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 22: Women marching, by Alice Toich © Book Dash, 2014. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 23: An old lady, by Alice Toich © Book Dash, 2014. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license.

हम, एक-साथ मज़बूत होंगे - अल्बर्टिना सिसुलू की कहानी

(Hindi)

जन्म से मृत्यु तक अल्बर्टिना सिसुलू ने प्रेम और बलिदान की ज़िंदगी जी. वो एक बहादुर लड़की थी जो घुड़सवारी करती थी. वो अपने परिवार, समाज ओ दक्षिण अफ्रीका के लिए एक आशीर्वाद थी. यह कहानी एक नायाब और शक्तिशाली महिला के बारे में है, जो अपने आदर्शों के लिए हमेशा लड़ी. यह जीवनी बहुत लोगों को प्रेरणा देगी.

This is a Level 4 book for children who can read fluently and with confidence.

PRATHAM BOOKS storyweaver

Pratham Books goes digital to weave a whole new chapter in the realm of multilingual children's stories. Knitting together children, authors, illustrators and publishers. Folding in teachers, and translators. To create a rich fabric of openly licensed multilingual stories for the children of India and the world. Our unique online platform, StoryWeaver, is a playground where children, parents, teachers and librarians can get creative. Come, start weaving today, and help us get a book in every child's hand!